हिन्दी शिक्षा में प्रयुक्त शिक्षण सामग्री का प्रभाव

डॉ. अशोक परमार*

सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने हिन्दी विषय के अध्ययन अध्यापन में चयनित शिक्षा सामग्री के प्रभाव को ज्ञात करने का प्रयास किया है। शोधकार्य के लिए कक्षा आठवीं के हिन्दी विषय के लिए चयनित विषयवस्तु को सरलता से पढाने के लिए शिक्षकों की सहायता से शिक्षण सामग्री का चयन किया। चयनित शिक्षण सामग्री के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए दो प्रयोग किये गये। दोनों प्रयोग में चार विद्यालय के 100 पुरूष छात्र एवं 80 महिला छात्राओं में से 50 पुरूष छात्र एवं 40 महिला छात्रों को शिक्षण सामग्री के द्वारा एवं 50 पुरूष छात्र एवं 40 महिला छात्रों को रूढ विधि के द्वारा पढाया गया। शिक्षा कार्य के पश्चात शिक्षण सामग्री के प्रभाव को ज्ञात करने क लिए शोधकार्य के लिए निर्मित हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी के द्वारा छात्रों के प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य ज्ञात किया गया। प्राप्त टी–मूल्य का सार्थकता स्तर देखने से पता चला की शिक्षण सामग्री के द्वारा अध्ययन–अध्यापन करनेवाले छात्रों की लब्धि रूढ विधि के द्वारा अध्ययन–अध्यापन करनेवाले छात्रों से अधिक थी।

प्रस्तावना

कई ऐसी वस्तुएँ है जिनमें गृहउपयोगी चीजें, प्रतिमा, बर्तन, खिलौने, गेहने आदि का उपयोग उसके निर्माण एवं रचना के आधार पर किया जाय तो उसका अर्थ और उपयोग मर्यादित हो जाता है इस लिए ऐसी वस्तुओं को कक्षा अध्यापन में सामिल करने की प्रक्रिया को Innovation कहा जाता हैं। Innovation का अर्थ उत्पन्न करना नहीं अपितु जो अनुसंधान हुआ है उसमें कुछ नया जोड़कर या उसके उपयोग संबंधी पद्धति में परिवर्तन करके नवीनीकरण करना है। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे अनेक विषयांग है जिसमें अध्यापक चाहे तो सामान्य वस्तुएँ जैसेः बर्तन, गेहने, खिलौने, पेपर कटिंग्स, फिल्म स्ट्रिप, DVD, टेपरिकार्डर, तसवीरें, स्वनिर्मित उपकरणों को शिक्षण सामग्री के रूप में प्रयुक्त कर सकता हैं।

प्राचीन काल से चली आई शिक्षा नीति में प्रवर्तमान समय और शिक्षा के क्षेत्र को देखकर आवश्यक बदलाव जरूरी है। केवल चॉक और टॉक की शिक्षा अब उद्देश्य प्राप्ति की प्रक्रिया के लिए प्रभावी नहीं रही। अतः वर्तमान कक्षा–कक्ष शैक्षणिक प्रक्रिया को प्रभावी एवं सरल बनाने के लिए शिक्षण–सामग्री कहाँ तक सहायता कर सकती है इसके लिए यह शोध किया गया है।

शोध विषय

हिन्दी शिक्षा में प्रयुक्त शिक्षण सामग्री का प्रभाव

शोध के उद्देश्य

शोध कार्य के उद्देश्य निम्नांकित हैः

1. हिन्दी शिक्षण में प्रयुक्त की जा सके ऐसी शिक्षण सामग्री का चयन एवं निर्माण करना
2. प्रयोग पश्चात् छात्रों की शैक्षिक लब्धि ज्ञात करने के लिए हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी की रचना करना
3. रूढ़ विधि एवं चयनित शिक्षण–सामग्री के माध्यम से किये गये अध्ययन से छात्रों की प्राप्त शैक्षिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना
4. कक्षा 8वीं के हिन्दी विषय के लिए चयन की गई शिक्षण–सामग्री की विद्यालय के क्षेत्रानुसार छात्रों की शैक्षिक लब्धि पर प्रभाव ज्ञात करना
5. कक्षा 8वीं के हिन्दी विषय के लिए चयन की गई शिक्षण–सामग्री की विद्यालय के छात्रों की जाति के संदर्भ में प्राप्त शैक्षिक लब्धि का प्रभाव ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. प्रयोग 1 के प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह के कुमारों के हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों के प्रतिशत क्रमांक के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. प्रयोग 1 के प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह की कन्याओं के हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों के प्रतिशत क्रमांक के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण विभाग, शिक्षण विद्याशाखा (IASE), गुजरात विद्यापीठ, (अहमदाबाद)

3. प्रयोग 2 के प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह के कुमारों के हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों के प्रतिशत क्रमांक के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. प्रयोग 2 के प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह की कन्याओं के हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों के प्रतिशत क्रमांक के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोधकार्य के चर

प्रस्तुत अध्ययन में समाविष्ट चर का विवरण निम्नांकित तालिका 1 में है।

तालिका 1
शोधकार्य में समाविष्ट चर

चर	चर विवरण	चर कक्षा
स्वतंत्र चर	अध्यापन पद्धति	शिक्षण सामग्री के द्वारा अध्यापन
		रूढ विधि के द्वारा अध्यापन
परतंत्र चर	शैक्षिक लब्धि	उत्तर कसौटी के प्राप्तांक
परिवर्तक चर	जाति	कुमार- कन्या
अंकुशित चर	विषय/ इकाई	कक्षा 8वीं के हिन्दी की इकाईयाँ

शोध का व्यापविश्व

प्रस्तुत शोध का व्यापविश्व अहमदाबाद जिल्ले की प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 8वीं के शहरी और ग्राम्य क्षेत्र के कुमार और कन्याएँ थी।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए चार माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया था। जो चारों माध्यमिक विद्यालय मिश्र विद्यालय थे। इस चार विद्यालय में से प्रथम शहरी दो विद्यालय को प्रयोग 1 के लिए एवं अन्य दो ग्राम्य विद्यालय को प्रयोग 2 के लिए चयनित किया गया था। न्यादर्श का विवरण तालिका 2में है।

तालिका 2
न्यादर्श चयन

जूथ निर्माण	प्रयोग 1 (शहरी क्षेत्र)				प्रयोग 2 (ग्राम्य क्षेत्र)			
जाति	कुमार		कन्या		कुमार		कन्या	
जूथ निर्माण	प्रायोगिक	नियंत्रित	प्रायोगिक	नियंत्रित	प्रायोगिक	नियंत्रित	प्रायोगिक	नियंत्रित
छात्र संख्या	25	25	20	20	25	25	20	20

शोध पद्धति एवं विधि

प्रस्तुत शोधकार्य हिन्दी के अध्यापन के लिए शिक्षण सामग्री के प्रभाव का मूल्यांकन करना था। अतः प्रस्तुत शोधकार्य के लिए पद्धति के रूप में प्रायोगिक शोध पद्धति का चयन किया गया था। प्रायोगिक शोध होने के कारण प्रस्तुत शोधकार्य के लिए प्रायोगिक शोध योजना के रूप में दो समकक्ष समूह केलव उत्तर कसौटी योजना चयन किया गया है।

हिन्दी शिक्षा के लिए शिक्षण सामग्री का चयन

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य हिन्दी शिक्षा के लिए प्रयुक्त शिक्षण सामग्री का चयन था। अतः शोधकर्ता ने सबसे प्रथम कक्षा 8वीं के हिन्दी पाठ्यपुस्तक में से इकाईयों का चयन किया। इस इकाईयों का चयन करके हिन्दी विषय का अध्यापन कार्य करवाने वाले शिक्षकों को एक मतावली के माध्यम से यह सूचित करने के लिए कहा कि आपको हिन्दी की इस इकाईयों में से सरल, मध्यम एवं कठिन इकाइयों का चयन करके बताना है। शिक्षकों के द्वारा चयनित सरल, मध्यम एवं कठिन इकाईयों में से 20:सरल, 40:मध्यम एवं 40: कठिन इकाइयों का चयन करके उसके विषयवस्तु के आधार पर निम्नांकित शिक्षा सामग्री का चयन किया गया। हिन्दी शिक्षा में प्रयुक्त शिक्षा समाग्री का विवरण तालिका 3 में प्रस्तुत है।

तालिका 3
शोधकार्य में प्रयुक्त शिक्षण सामग्री समूह माध्यम के प्रकारों के अनुसार

कम	सामग्री का प्रकार	शिक्षण सामग्री का विवरण
1.	दृश्य सामग्री	प्रतिमाएँ, तसवीरें, खिलौने, वर्तन, गेहने, गृह उपयोगी वस्तुएँ, शॉपीस, मूल पदार्थ, खाद्य सामग्री, वाजिंत्र, अस्त्र और शस्त्र।
2.	श्रव्य सामग्री	टेपरिकार्डर, श्रव्य कैसेट, MP-3 CD.
3.	दृश्य-श्रव्य सामग्री	TV, डी.वी.डी प्लेयर, Film.
4.	स्वनिर्मित सामग्री	फ्लेश कार्ड, Audio Cassettes, लकडी से वनी सामग्री, चित्रनाटय, चार्टस।
5.	मुद्रित सामग्री	Children Money, Postal Document, केलेन्डर, कहानी, पेपर कटिंग्स, धार्मिक कहानी।

उपकरण निर्माण (हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी)

हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी निर्माण के लिए 8वीं कक्षा की पाठयपुस्तक के आधार पर एक मतावली तैयार की गई। जिसमें कक्षा 8वीं के पाठयपुस्तक की विषयसूची के सामने रिक्त स्थान पर हिन्दी शिक्षकों को सरल, मध्यम और कठीन लगने वाली इकाईयों के सामने सही (√) का चिह्न करने की सूचना के साथ भेजी गई। शिक्षकों से प्राप्त सुझाव के आधार पर 40% कठिन 40% मध्यम और

20% सरल इकाईयों का चयन किया, चयनित इकाई पर आधारित अध्यापन कार्य में सहयोगी हो सके ऐसी शिक्षण सामग्री की सूची पाठयवस्तु के आधार पर बनाई गई। शिक्षण सामग्री की सूची शिक्षकों को भेजी गई। शिक्षकों से प्राप्त सुझावों के आधार पर शिक्षण सामग्री का अंतिम चयन किया गया। चयनित इकाईयों और शिक्षण सामग्री के आधार पर 100 अंकों की कसौटी का निर्माण किया गया। निर्मित कसौटी को गुजरात के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षाशास्त्री और भाषा शिक्षकों, विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर कसौटी का पुनः निर्माण किया गया।

प्रदत्तों का आकलन

शोधकार्य के प्रदत्तों का आकलन एवं विश्लेषण यथार्थ हो यह शोध के लिए महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध में प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह के सभी छात्रों को बुद्धि कसौटी दी गई उसके प्राप्तांकों के द्वारा समेल जोड़ों का निर्माण किया। समेल जोड़ों को कक्षा 7वीं के पाठयवस्तु आधारित लब्धि कसौटी देकर समेल जोड़ों की सार्थकता जाँची गई। समेल जोड़ों का निर्माण करके चारों माध्यमिक विद्यालयों में से सिक्का उछालकर दो विद्यालयों को प्रायोगिक समूह और दो माध्यमिक विद्यालयों को नियंत्रित समूह में बाँटा गया। प्रायोगिक समूह के विद्यालयों में शिक्षण सामग्री के साथ अध्यापन कार्य और नियंत्रित समूह में रूढ़ विधि से शिक्षा कार्य किया। 10 इकाईयों का शिक्षण कार्य पूरा होने के बाद कक्षा 8वीं की चयनित विषयवस्तु आधारित निर्मित उत्तर कसौटी के माध्यम से दोनों समूह के छात्रों की लब्धि ज्ञात की गई। प्राप्त लब्धि के द्वारा दोनों समूह के छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया। सार्थकता स्तर के माध्यम से दोनों समूह के प्राप्तांकों के मध्य का अंतर ज्ञात किया गया। प्राप्त समंकों के आधार पर परिकल्पनाओं की जाँच की गई।

प्रदत्त विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में समाविष्ट न्यादर्श के द्वारा हिन्दी विषयक कसौटी में प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर परिकल्पानाओं की जांच की गई थी। परिकल्पना की जांच के लिए प्राप्तांको का मध्यक, मानक विचलन ज्ञात किया गया। परिकल्पनाओं की जांच के लिए टी–कसौटी का उपयोग किया गया था। प्रदत्तो के हिन्दी विषयक कसौटी में प्राप्त प्राप्तांकों के द्वारा पूर्वनिर्धारित परिकल्पनाओं के जांच का विवरण तालिका 4 में प्रस्तुत है।

तालिका 4
परिकल्पना की जांच के लिए प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य

प्रयोग	समूह	जाति	न्यादर्श	मध्यमान	मानक त्रूटि	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1	प्रायोगिक	कुमार	25	78.40	9.92	2.94	14.00	0.01
	नियंत्रीत	कुमार	25	37.20	10.85			
	प्रायोगिक	कन्या	20	80.40	8.33	3.69	14.65	0.01
	नियंत्रीत	कन्या	20	26.30	14.25			
2	प्रायोगिक	कुमार	25	79.04	6.99	3.16	11.50	0.01
	नियंत्रीत	कुमार	25	42.60	14.20			
	प्रायोगिक	कन्या	20	78.15	13.11	4.32	7.84	0.01
	नियंत्रीत	कन्या	20	44.25	14.19			

तालिका 4 को देखने से पता चलता है कि प्रयोग 1 एवं प्रयोग 2 के दौरान कुमार और कन्याओं के हिन्दी विषयक उत्तर कसौटी के प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान में प्रायोगिक समूह के छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान अधिक प्राप्त हुआ था एवं दोनों समूह के प्राप्तांकों के मध्यमान का टी–मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक ज्ञात हुआ था। अतः परिकल्पना 1, 2, 3 एवं 4 स्वीकृत नहीं हुई थी।

शोध के निष्कर्ष

शोध के निष्कर्ष निम्नांकित है।

1. प्रयोग 1 में प्रायोगिक समूह के कुमारों के उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों का मध्यमान 78.40 है, जो नियंत्रित समूह के कुमारों के प्राप्तांकों के मध्यमान 37.20 से अधिक है एवं मानक विचलन 9.92 और 10.85 है जिसका क्रान्तिक अनुपात 14.00 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः प्रयोग 1 के प्रायोगिक समूह के कुमारों की शैक्षिक लब्धि पर शिक्षण सामग्री का प्रभाव ज्ञात हुआ था।

2. प्रयोग 1 की कन्याओं के प्रयोग में प्रायोगिक समूह की कन्याओं के उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों का मध्यमान 80.40 है, जो नियंत्रित समूह की कन्याओं के मध्यमान 26.30 से अधिक है एवं मानक विचलन 8.33 और 14.25 है जिसका क्रान्तिक अनुपात 14.65 है जो 0. 01 स्तर पर सार्थक है। अतः प्रयोग 1 के प्रायोगिक विद्यालयों की कन्याओं की शैक्षिक लब्धि पर शिक्षण सामग्री का प्रभाव ज्ञात हुआ था ।

3. प्रयोग 2 के प्रायोगिक समूह के कुमारों के उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों का मध्यमान 79.04 है, जो नियंत्रित समूह के ग्राम्य क्षेत्र के कुमारों के उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों के मध्यमान 42.60 से अधिक है एवं मानक विचलन 6.99 और 14.20 है जिसका क्रान्तिक अनुपात 11.50 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः प्रयोग 2 के प्रायोगिक समूह के कुमारों की शैक्षिक लब्धि पर शिक्षण सामग्री का प्रभाव ज्ञात हुआ था ।

4. प्रयोग 2 के प्रायोगिक समूह की कन्याओं के उत्तर कसौटी के प्राप्तांकों का मध्यमान 78.15 है, जो नियंत्रित समूह की कन्याओं के प्राप्तांकों के मध्यमान 44. 25 से अधिक है। जिसका मानक विचलन 13.11 और 14.19 है और क्रान्तिक अनुपात 7.84 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः प्रयोग 2 की प्रायोगिक समूह की कन्याओं की शैक्षिक लब्धि पर शिक्षण सामग्री का प्रभाव ज्ञात हुआ था।

शैक्षिक निहीतार्थ

रूढ़ विधि के द्वारा पढ़ाए गए प्रयोग 1 के शहरी क्षेत्र के कुमारों और कन्याओं के प्राप्तांकों से ज्ञात होता है कि ऐसे कुमारों को शिक्षण–सामग्री के द्वारा पढ़ाया जाय तो उनकी शैक्षिक लब्धि बढ सकती थी।

रूढ़ विधि के द्वारा पढ़ाए गए प्रयोग 2 के ग्राम्य क्षेत्र के कुमारों और कन्याओं के प्राप्तांकों से ज्ञात होता है कि ऐसे कुमारों को शिक्षण–सामग्री के द्वारा पढ़ाया जाय तो उनकी शैक्षिक लब्धि बढ सकती थी।

समापन

प्रस्तुत शोधकार्य का प्रमुख उद्देश्य कक्षा–कक्ष अध्यापन में हिन्दी के अध्यापक एवं छात्रों के लिए बोलना और सुनना कम हो जिसके लिए अध्यापक स्वयं विषयवस्तु से सम्बन्धित शिक्षण–सामग्री का चयन करके वर्गखंड में शिक्षा कार्य करें यह है। शिक्षक वर्गखंड में सभी दर्शनिय स्थानों का वर्णन केवल शाब्दिक रूप में करता है, किन्तु इस शाब्दिक वर्णन का प्रभाव वर्गखंड के बाहर जाते ही असर रहित हो जाता है। सभी शिक्षक वर्गखंड में अगर शिक्षण–सामग्री का उपयोग करके शिक्षण कार्य करेंगे तो शिक्षण प्रक्रिया अधिक रूचीपूर्ण एवं रसप्रद होगी।

संदर्भ सूचि

Sing, R.R. (2006). Advanced Research Method in Education, New Delhi: Shree Publishers and Distributor

प्रसाद, के. पी. (2005). ब्रृहद हिन्दी कोश, वाराणसीः ज्ञान मंडल लि.

शर्मा, ए., और सक्सेना आर. (2004). शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबंध, जयपुरः इन्डियन पब्लिशिंग हाउस.

शर्मा, एस. (2002). शिक्षा शास्त्र, दिल्लीः कोस्मोस बुकव्ही प्रा.लि.

त्रिपाठी, एम. डी. (2006). आधुनिक शिक्षा तकनीक एवं उपकरण, दिल्लीः ओमेघा पब्लिकेशन्स

वशिष्ट, के. सी. (2006) शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता,

ઉચાટ, ડી. એ. (2009). શક્ષિણ અને સામાજકિ વજ્ઞિાનોમાં સંશોધનનું પદ્ધતશિાસ્ત્ર, અમદાવાદઃ સાહત્યિ મુદ્રાનાલય